एकादश माला, खंड 13, अंक 1

सोमवार, 21 अप्रैल, 1997
1 वैशाख, 1919 (शक)

लोक सभा वाद-विवाद

(हिन्दी संस्करण)

56
Date 24.12.97

चौथा सत्र

(भाग-तीन)

(ग्यारहवीं लोक सभा)

(खण्ड 13 में अंक 1 और 2 हैं)

लोक सभा सचिवालय

नई दिल्ली

मूल्यः पचास रुपये

सम्पादक मण्डल

श्री एस. गोपालन
महासचिव
लोक सभा

श्री सुरेन्द्र मिश्र
अपर सचिव
लोक सभा सचिवालय

श्री प्रकाश चन्द्र भट्ट
मुख्य सम्पादक
लोक सभा सचिवालय

श्री केवल कृष्ण
वरिष्ठ सम्पादक

श्रीमती वन्दना त्रिवेदी
सम्पादक

श्री पीयूष चन्द्र दत्त
सहायक सम्पादक

श्रीमती अरूणा वशिष्ठ
सहायक सम्पादक

(अंग्रेजी संस्करण में सम्मिलित मूल अंग्रेजी कार्यवाही और हिन्दी संस्करण में सम्मिलित मूल हिन्दी कार्यवाही ही प्रामाणिक मानी जायेगी। उनका अनुवाद प्रामाणिक नहीं माना जायेगा।)

विषय-सूची

[एकादश माला, खंड 13, चौथा सत्र (भाग-तीन), 1997/1919 (शक)]

अंक 1, सोमवार, 21 अप्रैल, 1997/1 वैशाख, 1919 (शक)

विषय	कालम
प्रधान मंत्री का परिचय	1
मंत्रियों का परिचय	2—3
निधन संबंधी उल्लेख और हज यात्रियों के मारे जाने के बारे में व्यक्त संवेदना	3—20
श्री इन्द्र कुमार गुजराल	5—7
श्री अटल बिहारी वाजपेयी	7—8
श्री शरद पवार	8—10
श्री सोमनाथ चटर्जी	10—11
श्री मधुकर सरपोतदार	11—12
श्रीमती गीता मुखर्जी	12
सरदार सुरजीत सिंह बरनाला	12—14
श्री चित्त बसु	14—15
श्री चन्द्रशेखर	15—16
श्री इलियास आजमी	16—17
श्री जार्ज फर्नान्डीज	17—19
श्री जी॰एम॰ बनातवाला	19—20
श्री सनत कुमार मंडल	20

लोक सभा

सोमवार, 21 अप्रैल, 1997/1 वैशाख, 1919 (शक)

लोक सभा पूर्वाह्न 11.04 बजे समवेत हुई

[अध्यक्ष महोदय *पीठासीन हुए]*

(व्यवधान)

[अनुवाद]

डा॰ मल्लिकार्जुन (महबूब नगर) : महोदय, चूंकि प्रधान मंत्री और अन्य मंत्रीगण नहीं पहुंचे हैं, अतः सभा को स्थगित किया जाए।

अध्यक्ष महोदय : पहला कार्य प्रधान मंत्री का परिचय है। जैसा कि हम सभी जानते हैं शपथ ग्रहण समारोह अभी समाप्त हुआ है। और प्रधान मंत्री तथा अन्य मंत्रियों को यहां पहुंचने में समय लगेगा।

(व्यवधान)

श्री निर्मल कान्ति चटर्जी (दमदम) : महोदय, सभा को आधे घंटे के लिए स्थगित कर दिया जाये।

अध्यक्ष महोदय : सभा पूर्वाह्न 11.30 बजे पुनः समवेत होने तक के लिए स्थगित होती है।

पूर्वाह्न 11.06 बजे

तत्पश्चात लोक सभा पूर्वाह्न 11.30 बजे तक के लिए स्थगित हुई।

पूर्वाह्न 11.31 बजे

लोक सभा पूर्वाह्न 11.31 बजे पुनः समवेत हुई।

[अध्यक्ष महोदय *पीठासीन हुए]*

प्रधान मंत्री का परिचय

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : माननीय सदस्यों, मुझे भारत के माननीय प्रधान मंत्री श्री इन्द्र कुमार गुजराल जी से इस सभा का परिचय कराते हुये हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। हम सभी इनसे परिचित हैं। हम उन्हें शुभकामनाएं देते हैं और उनके कार्य में उनकी सफलता के लिए कामना करते हैं।

माननीय प्रधान मंत्री अब अपने मंत्रिमंडल से परिचय कराएं।

मंत्रियों का परिचय

प्रधान मंत्री (श्री इन्द्र कुमार गुजराल) : महोदय, मेरे लिए कहे इन शब्दों के लिए आपका और मेरे इस स्वागत के लिए अपने सहयोगियों का धन्यवाद करते हुए मैं आपकी अनुमति से सरकार में अपने सहयोगियों का परिचय देता हूं।

मंत्रिमंडल स्तर के मंत्री :

श्री बलवंत सिंह रामूवालिया

श्री बेनी प्रसाद वर्मा

श्री चतुरानन मिश्र

श्री इन्द्रजीत गुप्त

श्री बीरेन्द्र प्रसाद वैश्य

श्री सी॰एम॰ इब्राहीम

श्री मुलायम सिंह यादव

श्री मुरासोली मारन

प्रो॰ सैफुद्दीन सोज

श्री आर॰एल॰ जालप्पा

श्री राम विलास पासवान

श्री श्रीकान्त जेना

श्री टिंडिवनाम जो॰ लेंकटरामन

श्री किंजारप्पू येरननायडू

राज्य मंत्री

श्री बोल्ला बुल्ली रमैया

श्री चंद्रदेव प्रसाद वर्मा

श्री दिलीप कुमार राय

कैप्टन जय नारायण प्रसाद निषाद

श्रीमती कांति सिंह

श्री एम॰पी॰ वीरेन्द्र कुमार

श्री मुहीराम सैकिया

श्री एन॰वी॰एन॰ सोमू

श्री रघुवंश प्रसाद सिंह

श्री रमाकान्त डी॰ खलप

डा॰ एस॰ वेणुगोपालाचारी

श्री सतपाल महाराज

श्री शीश राम ओला

श्री टी॰आर॰ बालू

डा॰ उम्मारेड्डी वेंकटेस्वरलू

श्री योगेन्द्र के॰ अलघ

धन्यवाद।

मैं एक बार फिर अपने सहयोगियों, विशेष रूप से विपक्ष के अपने मित्रों को धन्यवाद देता हूं। मैं सभी को हृदय से धन्यवाद देता हूं।

पूर्वाह्न 11.37 बजे

[अनुवाद]

निधन संबंधी उल्लेख
और
हज यात्रियों के मारे जाने के बारे में व्यक्त संवेदना

अध्यक्ष महोदय : माननीय सदस्यों, मुझे सभा को हमारे प्रिय मित्र श्री बीजू पटनायक के दुखद निधन की सूचना देनी है।

बिजयानन्द पटनायक उड़ीसा के आस्का संसदीय निर्वाचन क्षेत्र से वर्तमान लोकसभा के सदस्य थे। प्यार से जनता इन्हें बीजू पटनायक के नाम से पुकारती थी। उनका जन्म कटक, उड़ीसा के एक स्वतंत्रता सेनानी, सिद्धान्तवादी और देशभक्त परिवार में हुआ।

प्रारम्भिक वर्षों में वह महात्मा गांधी और उड़ीसा के महान राष्ट्रवादी सपूतों गोपबंधुदास और मधुसूदन दास से प्रभावित हुए।

वे स्वतंत्रता संग्राम में कूद पड़े और उन्होंने आस्का आसफ अली और उनकी अंग्रेजों के विरूद्ध गुप्त रूप से की गई गतिविधियों से जुड़ कर अंग्रेजों भारत छोड़ों" आन्दोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया। वर्ष 1943 से 1946 के दौरान वह लाल किला, नई दिल्ली फिरोजपुर, लाहौर और कटक में कारावास में रहे।

उन्होंने डचों को ललकारा और प्रधान मंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू की प्रेरणा से उन्होंने व्यक्तिगत रूप से जोखिम उठाकर इंडोनेशिया के स्वतंत्रता संग्राम में उनके स्वतंत्रता सेनानियों को अपना सहयोग दिया। वह नेपाली लोकतांत्रिक आंदोलन से भी संबद्ध रहे।

1962 में चीन के साथ लड़ाई के समय पंडित जी के कहने पर राजनय के क्षेत्र में उन्होंने जो राष्ट्र की सेवा की, वह इतिहास का अंग है।

देश के लोकतंत्र के लिए उनका सबसे बड़ा योगदान यह था कि उन्होंने उड़ीसा और राष्ट्रीय स्तर पर गुटबन्दी वाली राजनीति के रहते दृढ़तापूर्वक और कई बार विपक्ष में एकता स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वास्तव में उन्होंने यह सिद्ध कर दिया कि राजनैतिक जीवन का आनन्द विपक्ष के रहते ही है।

अमरीकी संविधान के निर्माताओं श्री हेमिलटन और श्री मेडीसन की तरह श्री बीजू पटनायक का विश्वास था कि राष्ट्रीय एकता को संघीय प्रणाली द्वारा बरकरार रखा जाए। उनके अनुसार संघीय प्रणाली एक आर्थिक सिद्धान्त था, राजनैतिक नारा नहीं। उन्होंने संयुक्त राज्य भारत की भी परिकल्पना की थी जिसमें वित्तीय संसाधनों का राज्यों में उनकी प्राकृतिक संपदाओं का दोहन करने की क्षमता के अनुरूप समान रूप से वितरण हो।

वह हृदय से समाजवादी थे और आचार्य नदेन्द्र देव, जय प्रकाश नारायण और मीनू मसानी उनकी प्रेरणा के स्रोत थे।

प्रधान मंत्री चौधरी चरण सिंह जी की तरह उनका विश्वास था कि सुदृढ़ किसान देश का आधार है और वह चाहते थे कि कृषि का आधुनिकीकरण हो। इसके साथ-साथ स्वभाव से उद्यमी, कलिंग एअरलाइन्स और उड़ीसा टेक्सटाइल मिल के संस्थापक वह कृषि समान्तवाद को समाप्त करना चाहते थे और उनकी इच्छा थी कि औद्योगिक क्रान्ति का सूत्रपात हो। साठ के दशक में जब वह पहली बार उड़ीसा के मुख्य मंत्री बने। उन्होंने राज्यपाल श्री अयोध्या नाथ खोसला के साथ मिलकर एक "होनहार दशक" की नींव रखी तथा राज्य में औद्योगिक युग का सूत्रपात किया। बाद में नब्बे के दशक में पुनः जब वह उड़ीसा के मुख्य मंत्री बने तो औद्योगिकरण उनका प्रधान लक्ष्य बना रहा और वह चाहते थे कि गतिशील विश्व और राष्ट्रीय आर्थिक परिदृश्य को ध्यान में रखते हुए सरकारी क्षेत्र के उद्यमों को बाजार अर्थव्यवस्था में शामिल होकर मजबूती हासिल करनी चाहिए।

उड़ीसा की अपनी समुद्रतटी परम्पराओं के बारे में वह अतीत के प्रति मोहाविष्ट तथा बहुत उत्साहित थे और पारादीप पत्तन के लिए भी उनके प्रयास कम नहीं थे।

संख्या में कम किन्तु कार्यक्षम नौकरशाही में पूर्ण विश्वास रखते हुए उन्होंने निर्भय होकर खर्च में किफायत की वकालत की। उनका मानना था कि किफायत व्ययस्था का एक अंग होना चाहिए, न कि आर्थिक संकट होने की स्थिति में खर्च में कटौती को अपनाया जाए।

वह महिलाओं को शान्ति प्रदान करने के पक्षधर थे। इनके लिए उन्होंने न केवल स्थानीय निकायों में बल्कि सरकारी नौकरियों में भी महिलाओं को एक तिहाई आरक्षण प्रदान किया।

उनके द्वारा स्थापित कलिंग फाउन्डेशन और पुरस्कार, विज्ञान के प्रसार के जरिए समाज के आधुनिकीकरण की उनकी विचार-धारा की हमेशा याद दिलाते रहेंगे। श्री बीजू पटनायक का राजनैतिक जीवन बहुआयामी था। अपना जीवन रायल एअर फोर्स के सदस्य के रूप में आरम्भ कर उनका स्थान नागर विमानन, उद्यम और राजनीति के प्रति रहा और अंत में वह एक राजनीतिज्ञ बने जो चार दशक तक रहे। उड़ीसा के प्रति उनके मोह और नई दिल्ली में उनके दायित्व के कारण उनका सार्वजनिक जीवन-राज्य और केन्द्र के बीच केन्द्रित रहा।

वह 1977-79, 1980-84 और 1984-85 के दौरान केन्द्रपाडा संसदीय निर्वाचन क्षेत्र से क्रमशः छठी, सातवीं और आठवीं लोक सभा के सदस्य रहे। वह 1977-80 के दौरान केन्द्र में इस्पात, खान और कोयला मंत्री रहे। 1971 में वह राज्य सभा के सदस्य रहे। वह सात

बार उड़ीसा विधान सभा के सदस्य भी रहे तथा 1961-63 और 1992-96 के दौरान वह उड़ीसा राज्य के मुख्य मंत्री रहे। 1996-97 के दौरान वह संसद में वित्त मामलों संबंधी स्थायी समिति के अध्यक्ष रहे।

श्री बीजू पटनायक का कुछ समय बीमार रहने के उपरान्त 81 वर्ष की आयु में 17 अप्रैल, 1997 को नई दिल्ली में निधन हो गया।

हम देश के इस महान सपूत के निधन पर गहरा शोक व्यक्त करते हैं और मुझे आशा है कि शोक-संतप्त परिवार के प्रति संवेदना व्यक्त करने में यह सभा मेरे साथ है।

माननीय सदस्यों, इस वर्ष हज यात्रा जो कि समूचे विश्व के मुसलमानों के लिए परम्परागत पवित्र यात्रा है, में एक त्रासदी हुई, जिसमें मक्का के निकट मीना में लगी भीषण आग के कारण भारी संख्या में तीर्थयात्री मारे गए और बहुत से लोग घायल हो गए।

सभा हज तीर्थयात्रियों के साथ हुई इस त्रासदी पर अपना दुख व्यक्त करती है। मैं अपनी ओर से और समस्त सभा की ओर से दिवंगत आत्माओं के परिवारों के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता हूं और घायलों के शीघ्र स्वास्थ्य लाभ की कामना करता हूं।

प्रधान मंत्री (श्री इन्द्र कुमार गुजराल) : अध्यक्ष महोदय, यह एक दुखद और क्रूर विडम्बना है कि इस सभा में मुझे अपना पहला भाषण बड़े भारी दिल से स्वर्गीय श्री बीजू पटनायक, संसद सदस्य और जनता के विशिष्ट नेता को अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए देना पड़ रहा है जिनका 17 अप्रैल, 1997 को नई दिल्ली में निधन हो गया था। वह एक महान राष्ट्र भक्त, भारत माता के एक महान सपूत, विशाल व्यक्तित्व के धनी और स्वतंत्रता आन्दोलन के योद्धा थे जिनका व्यक्तित्व 5 दशकों से भी अधिक समय तक देश के जन मानस पर छाया रहा।

श्री बीजू पटनायक 81 वर्ष के थे लेकिन वह हमेशा युवा बने रहे। श्री जवाहर लाल नेहरू प्यार से उन्हें भारत का 'समुद्री डाकू' कहते थे। अपनी बहुमुखी प्रतिभा और अपनी निर्भीकता के कारण बीजू दादा अपने युवा जीवन में ही जीवन्त किंवदंती बन गए।

श्री बीजू पटनायक युवा और वृद्ध सभी के प्रिय रहे और सभी की प्रशंसा के पात्र बने। स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान गांधी जी द्वारा किये गये आह्वान पर वे 13 वर्ष की आयु में ही स्वतंत्रता संग्राम में कूद पड़े और उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय भूमिका निभाई। राष्ट्र के प्रति उनकी उत्कृष्ट तथा सक्रिय सेवाओं के कारण तथा दिल और दिमाग संबंधी उनके गुणों के कारण राष्ट्रीय आन्दोलन में उनका एक महत्वपूर्ण स्थान है। वह अपने सार्वजनिक जीवन में असंख्य लोगों के लिये एक प्रिय नेता, अच्छे मार्गदर्शक, दार्शनिक और मित्र थे।

उनके निधन से मुझे व्यक्तिगत क्षति हुई है। देश ने एक सच्चा सपूत और जनता का मसीहा खो दिया। वह एक जाने माने तथा प्रगतिशील उद्योगपति थे।

1940-42 के दूसरे महायुद्ध के दौरान वह एयर-कमांड के प्रमुख थे। देश के भाग्य निर्माण में उनका हाथ था और उन्होंने श्री जय प्रकाश नारायण, डा॰ राम मनोहर लोहिया और अन्य जैसे दृढ़संकल्पी वाले लोगों के साथ उतार-चढ़ाव देखे हैं।

वर्ष 1943-46 के दौरान वे जेल गए। उन्होंने अपनी उड़ान क्षमता का पूरा फायदा उठाते हुए 1948 में श्रीनगर में, जहां पाकिस्तानी हमलावर लड़ रहे थे, पहली पलाटून उतारी थी।

वह अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी सक्रिय थे। वे इंडोनेशिया के स्वतंत्रता आन्दोलन के साथ भी जुड़े हुए थे जिसके लिए इंडोनेशिया सरकार ने उन्हें "भूमिपुत्र" उपाधि से सम्मानित किया था। वे 1953 से ही नेपाली लोकतांत्रिक आन्दोलन के साथ भी जुड़े हुए थे। दूसरे महायुद्ध के दौरान रूस की सेनाओं की सहायता के लिए उड़ानें भरने के लिए कृतज्ञ राष्ट्र रूस ने 50 वर्ष पहले सन् 1945 में श्री बीजू पटनायक को सम्मानित किया था।

उन्होंने उड़ीसा राज्य के लिए बहुत काम किया और राज्य का नक्शा ही बदल दिया। वह एकाधिक बार उड़ीसा के मुख्य मंत्री बने। उन्होंने कलिंगा एयर लाइन्स, कलिंगा ट्यूब, कपड़ा मिलें तथा कई अन्य उद्योग स्थापित किये। उन्होंने उड़ीसा में राउरकेला इस्पात संयंत्र और पाराद्वीप पत्तनों की स्थापना की। वह राष्ट्र विशेष रूप से, उड़ीसा की सेवा करने वाले लाखों लोगों के लिए हमेशा मार्गदर्शक बने रहे, विशेष रूप से लोक सभा, राज्य सभा तथा केन्द्र सरकार में उनकी हमेशा सकारात्मक भूमिका रही तथा उनका उद्देश्य हमेशा गरीबों तथा दलितों की भलाई करना तथा राष्ट्र को समृद्ध बनाने का होता था।

उनके निधन से एक महान स्वतंत्रता सेनानी हमसे बिछुड़ गया है तथा इससे राष्ट्र को अपूरणीय क्षति हुई है। देश तथा उड़ीसा राज्य के लिए उनकी सेवाओं को हमेशा याद रखा जाएगा। वह अनोखी प्रतिभा, दूरदृष्टि, कल्पना शक्ति वाले कर्मठ व्यक्ति थे। हम इस दिवंगत आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना करते हैं तथा उनके परिवार के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं।

कुमारी ममता बनर्जी (कलकत्ता दक्षिण) : हज तीर्थयात्रियों के साथ हुई त्रासदी के बारे में आपकी क्या राय है?...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : मैं पहले ही इस बारे में अपनी भावनाएं व्यक्त कर चुका हूं।

श्री इन्द्र कुमार गुजराल : महोदय, मेरा विचार था कि मैं हज तीर्थयात्रियों के साथ हुई त्रासदी के बारे में अपनी भावनाएं दूसरी बारी में व्यक्त करूंगा लेकिन चूंकि मेरे साथी महसूस कर रहे हैं कि इसे अभी लिया जाए इसलिए मैं अपनी भावनाएं व्यक्त करता हूं।

हज यात्रियों के साथ हुई दुर्घटना के संबंध में आपके द्वारा व्यक्त की गई भावनाओं के साथ मैं अपने आपको जोड़ता हूं। यह मेरा दुर्भाग्य था कि पिछले रविवार जब मैं अपने कार्यालय पहुंचा तो मुझे यह दुखद समाचार मिला। इस घटना में अनेक लोगों की जानें गई हैं। अभी तक हम सही-सही संख्या नहीं जान पाए हैं लेकिन कल रात हमें कुछ लोगों के नामों की सूची मिली है जिसमें घायल लोगों जोकि अस्पताल में हैं, उनके नाम दिए गए हैं।

सरकार की तरफ से हमने दुर्घटना में हुए घायल लोगों को घर वापस लाने के पूरे प्रबंध किये हैं तथा गंभीर रूप से घायल व्यक्तियों, जिन्हें अभी यहां लाना संभव नहीं है, उनके परिवारजनों को सरकार अपने खर्चे पर उनके पास भेजेगी। हम उनके नाम तथा अब उनकी

[श्री इन्द्र कुमार गुजराल]

हालत के बारे में जानने की कोशिश कर रहे हैं। साथ ही मृतकों के प्रति मैं सिर झुकाकर अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। यहां एक ऐसी त्रासदी है जिससे हमें गहरा धक्का लगा है। महोदय, मैं आपको आश्वासन देता हूं कि सरकार मृतकों के शवों को पूरे सम्मान के साथ घर लाने का प्रयत्न करेगी। सरकार यह भी सुनिश्चित करेगी कि इस दुर्घटना में मारे गये लोगों, घायलों अथवा जिनका सामान नष्ट हो गया है उनको पूरा-पूरा मुआवजा दिया जाए।

[हिन्दी]

श्री अटल बिहारी वाजपेयी (लखनऊ) : अध्यक्ष महोदय, कोई पद अगर रिक्त होता है तो उसे भर लिया जाता है लेकिन बीजू पटनायक के निधन से हमारे राष्ट्रीय जीवन में जो क्षति हुई है, शायद वह कभी पूरी नहीं होगी। कल तक वे हमारे बीच वहां बैठते थे, आज हम श्रद्धा के सुमन समर्पित करके संतोष कर रहे हैं। उनका व्यक्तित्व विराट था, हृदय विशाल था, खतरों से खेलने का उनका स्वभाव था और आकाश में उड़ने का शौक और दायित्व था। उनके स्वभाव में मस्ती थी। वे खरी बात कहने और सुनने के आदी थे लेकिन कभी कटुता को उन्होंने मन में पलने नहीं दिया।

अध्यक्ष महोदय, अभी आपने और प्रधान मंत्री जी ने श्री बीजू पटनायक के बहु-आयामी स्वभाव को शब्द-बद्ध किया, मैं उन बातों को फिर से दोहराना नहीं चाहता। मुझे भी थोड़े काल-खंड के लिए उनके साथ काम करने का अवसर मिला था लेकिन एक अफसोस मुझे हमेशा रहेगा। वह अफसोस इस बात का है कि आपातस्थिति के दौरान जब वे रोहतक जेल में बंद थे तो उनके संत्संग में शामिल होने का अवसर मुझे नहीं मिला। जेल में उनके जो साथी थे, वे बताते हैं कि किस तरह उन्होंने जेल में न केवल कष्ट सहन किया बल्कि हंसते-हंसते जेल के जीवन को भी काटा और अपने साथियों को हमजोली के रूप में उस घड़ी को एक महत्वपूर्ण घड़ी बनाने में मदद दी।

जेल ऐसा स्थान है जहां एक व्यक्ति का असली व्यक्तित्व सामने आ जाता है, उसके स्वभाव की परत-दर-परत खुल जाती है। जेल में बीजू बाबू के साथ पीलू मोदी भी थे। दोनों समृद्ध घरों से आने वाले थे और अच्छे जीवन के आदी थे लेकिन एक बार जब जेल में पहुंच गए तो कोई शिकवा नहीं, कोई शिकायत नहीं। स्वतंत्रता के संग्राम में एक उड़ाके के नाते उन्होंने जो संस्कार ग्रहण किए थे, शायद यह उनका ही फल था।

जेल में वे स्टोर-कीपर थे। जेल में भी सामान बाहर से आता था, वह बीजू पटनायक के कब्जे में सौंप दिया जाता था जिससे उसका योग्य और उचित वितरण हो सके। इसमें उन्होंने कभी लोगों को शिकायत का मौका नहीं दिया।

वे आधुनिक उड़ीसा के निर्माता थे तथा औद्योगिकीकरण के शिल्पी थे। आज उड़ीसा ने औद्योगिक क्षेत्र में जो प्रगति की है, वह बीजू बाबू की दूरदर्शिता और उनके प्रयत्नों का परिणाम है।

श्री बीजू पटनायक के निधन से अतीत को जोड़ने वाली एक कड़ी और टूट गई। अगर मैं कहूं कि एक युग की समाप्ति हो गई तो इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।

आपने और प्रधान मंत्री जी ने उनके प्रति जो शोक-संवेदना व्यक्त की है, उसमें मैं अपना स्वर भी मिलाता हूं और भगवान उनके परिवार को यह वज्रपात सहन करने की शक्ति दे, यह प्रार्थना करता हूं। उन्होंने कभी अपने परिवार को राजनीति में आगे बढ़ाने का प्रयास नहीं किया, और लाभ उठाने की चेष्टा नहीं की। उनके व्यक्तित्व के अनेक पहलू हैं जो कभी उद्घाटित होंगे। आज तो हम उनके निधन से अपने को बहुत अकिंचन पाते हैं।

अध्यक्ष महोदय, हज यात्रियों की संख्या बढ़ रही है, लेकिन उस अनुपात में हम शायद प्रबन्ध नहीं कर पा रहे हैं। जो विदेश गए थे और पुण्य का लाभ प्राप्त करने गए थे, उन्हें इस तरह त्रासदी का शिकार होना पड़ा। यह सचमुच में बड़े दुख की बात है। सउदी अरेबिया की सरकार इस मामले की जरूर जांच करेगी, लेकिन कई दिनों तक और कई घंटों तक, घर वाले किसी से संपर्क नहीं कर सके, न दिल्ली में, न मुम्बई में। इससे ऐसा लगता है कि प्रबन्ध की कमी यहां पर भी है।

अभी प्रधान मंत्री जी ने जो आश्वासन दिए हैं, उनसे संतोष होना चाहिए। लेकिन भविष्य में ऐसी त्रासदी न घटे, ऐसा प्रबंध करने की भी आवश्यकता है। जो हज यात्री वहां निधन को प्राप्त हुए हैं, मैं उनकी स्मृति में अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

श्री शरद पवार (बारामती) : अध्यक्ष महोदय, बीजू पटनायक के जाने से भारतवर्ष ने एक अद्वितीय व्यक्तित्व, स्वतंत्रता सेनानी, कुशल प्रशासक, अच्छा वैमानिक, यशस्वी उद्योज़क और दानिश्वर व्यक्ति खो दिया।

मुझे याद है कि इमर्जेंसी के बाद जब रोहतक की जेल से वे बाहर आए, तो कुछ दिनों के लिए आराम करने के लिए वे एक जगह गए और दो-चार नौजवानों को उन्होंने साथ लिया। मेरा सौभाग्य था कि उस समय मुझे 8-10 दिनों तक उनके साथ रहने का सुअवसर मिला। उन 8-10 दिनों में उन्होंने अपने जीवन की कई अद्भुत कथाएं हमारे सामने रखी थीं।

उनका जीवन एक साहसी जीवन था। जब वे स्कूल में थे, तो महात्मा जी की एक सभा कटक में हुई थी, उस सभा में जाने के लिए वे निकले। पुलिस ने उन्हें एक जगह रोका था। पुलिस ने उनकी पिटाई की, लेकिन महात्मा जी के दर्शन करने के लिए वे जितने उनके नजदीक जा सकते थे, उसके लिए उन्होंने कोशिश की। वे स्कूल और कालेज में बड़े अच्छा एथलीट थे। अच्छे क्रिकेटियर थे, फुटबाल के खिलाड़ी थे। कालेज की शिक्षा उन्होंने पूरी नहीं की और रायल एयरफोर्स में उन्होंने ज्वाइन कर लिया। इसमें उनकी बड़ी दिलचस्पी थी। हवाईजहाज चलाना और इसमें यदि कोई रिस्क आए, तो उसका सामना करना यह उनका स्वभाव था।

अंग्रेजों के राज्य में उन्होंने यह जिम्मेदारी ली थी, लेकिन उनके मन में देश की आजादी की भावना हमेशा रही थी। सदन को मालूम होगा कि उन्होंने रायल एयरफोर्स में सेवा करते समय कुछ राष्ट्रवादी

नेताओं को उस विमान से लेकर कई जगह पर छोड़ दिया। नेताजी सुभाष चन्द्र बोस के पर्चे उन्होंने कई जगह पर डिस्ट्रीब्यूट किए और इसलिए उनका कोर्ट मार्शल होकर तीन साल की सजा हुई थी। तब उनको पंडित जी के साथ मिलने का मौका मिला और तब से पंडित जी के आखिरी दिनों तक वे बड़े विश्वास के सहकारी रहे।

मध्याह्न 12.00 बजे

आजादी के बाद उन्होंने राजनीति में प्रवेश किया। एक तरफ उनकी यह भावना थी कि उड़ीसा में उद्योग के क्षेत्र में कुछ होना चाहिए और उसकी शुरुआत उन्होंने खुद से की। उन्होंने कलिंगा ट्यूब्स नाम की कम्पनी से, जो कि पूरे एशिया में सबसे बड़ी पाइप बनाने वाली थी, की एक फैक्टरी लगाई थी। कलिंगा एयरवेज, कलिंगा स्टील उनका सपना था। उड़ीसा की विधानसभा के लिए वे विजयी हो गये और 1960 में वे उड़ीसा के मुख्यमंत्री बने। वहां के पिछड़ेपन को दूर करने के लिए उन्होंने बहुत कोशिश की जिसके बारे में आपने भी अभी जिक्र किया कि वे मंदिर के प्रदीप हों। बाद में मिग की बड़ी फैक्टरी वहां लगाने का काम हुआ था राउरकेला का स्टील यूनिट हो, उस पर भी बीजू जी का योगदान बहुत ही सराहनीय था।

मुझे याद है जब भुवनेश्वर में कांग्रेस अधिवेशन हुआ था तब उसकी पूरी जिम्मेदारी श्री बीजू पटनायक जी ने ही ली थी। पूरे देश से लाखों कांग्रेस के साथी वहां आये थे। उनका ठीक तरह से प्रबंध करने का काम उन्होंने बड़ी अच्छी तरह से किया था। चीन के बारे में जो युद्ध हुआ, उसमें भी उन्होंने बहुत बड़ा काम किया था। देश की डिफरेंट फोर्सिस को जो नुकसान हुआ उसको दूर करने के लिए उन्होंने रशिया में जाकर कुछ बातचीत की थी और कोई करारदाद किया था।

वह हमेशा स्टेट के ऊपर ज्यादा ध्यान रखते थे। कुछ सालों के लिए वे लोक सभा में आ गये, राज्य सभा में आ गये मगर उनकी नजर हमेशा उड़ीसा की तरक्की के बारे में रही। एक बार फिर वे पांच साल के लिए वहां के मुख्य मंत्री हुए और अपने पांच साल के कार्यकाल में उन्होंने उड़ीसा का पिछड़ापन कैसे दूर हो सकता है, उड़ीसा की तरक्की कैसे हो सकती है, उड़ीसा में इरीगेशन प्रोजैक्ट कैसे ज्यादा आ सकते हैं, वहां इंडस्ट्री कैसे बन सकती है आदि पर ध्यान दिया था। कुछ गांवों ने अच्छा काम किया, कुछ पंचायत समितियों ने अच्छा काम किया तो उन्होंने उनका सम्मान अलग तरह से करने का निर्णय अपने राज्य में किया था। जो पंचायत समिति अच्छा काम करेगी तो उस क्षेत्र में एक करोड़ रुपये की लागत लगाकर कोई उद्योग बनाने का काम हाथ में लिया था। जो ग्राम पंचायत अच्छा काम करेगी तो वहां पर एक लाख रुपये का कुटीर उद्योग शुरू करने का उन्होंने निर्णय लिया था। उनका पूरा ध्यान यह था कि नई पीढ़ी को खेती से बाहर निकालकर उद्योग के क्षेत्र में जाना चाहिए जिससे वहां से वे देश के लिए सम्पत्ति अर्जित करें। इस पर उनका विश्वास था।

इस सदन में वे हमारे नजदीक बैठते थे। उनके मन में जो कुछ आता था वह बोल देते थे। स्टैंडिंग कमेटी के चेयरमैन के नाते उन्होंने फाइनेंस कमेटी में बहुत अच्छा काम किया। जहां आफिसरों को कुछ सिखाने, बोलने की जरूरत है वहां वे बड़ी अच्छे तरह से बोलते थे और सदन के सदस्यों की इज्जत रखने के लिए हमेशा सतर्क रहते थे। आज वे हमारे बीच से चले गये। देश और इस सदन का अच्छा संसद पटु, स्वतंत्रता सेनानी, वैमानिक, उद्योजक और भारत के सुपुत्र को आज हम खो बैठे हैं। वे हममें नहीं रहे मगर उनकी याद हमें हमेशा आयेगी। मैं अपनी तरफ से और अपनी पार्टी की तरफ से उनको यही स्मरण करके श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

दूसरा, हज यात्रियों के बारे में यहां कहा गया है। यह शायद दूसरी बार है। इससे पहले भी ऐसा ही आघात वहां हुआ था।

दुनिया से लाखों लोग जाते हैं। वहां इंतजाम भी ठीक होता है मालूम नहीं शायद मौसम अलग हो, कुछ कमियां हों जिससे इतनी बड़ी कीमत देनी पड़ी। जो भी यात्री इस संकट में फंसे, जो आज हमारे बीच नहीं रहे, मैं उनके लिए भी श्रद्धा सुमन अर्पित करता हूं।

[अनुवाद]

श्री सोमनाथ चटर्जी (बोलपुर) : अध्यक्ष महोदय, मैं अपने दल तथा अपनी ओर से सबसे लम्बे समय तक राजनीति में रहे अपने नेता के निधन पर गहरा शोक व्यक्त करता हूं। भारत के इस महान सपूत तथा दिग्गज नेता के निधन से आज भारतीय राजनीति का एक और स्तम्भ ढह गया है।

महोदय, मुझे इस सभा में उनके साथ बैठने का मौका मिला है। मैं उन्हें 'दादा' बुलाता था और उन्होंने मेरे साथ हमेशा अपने छोटे भाई की तरह व्यवहार किया। देश में उत्पन्न अनिश्चित राजनैतिक स्थिति से वह अत्यधिक चिंतित थे। संसदीय लोकतंत्र के प्रति उनकी प्रतिबद्धता, औद्योगिकीकरण के माध्यम से देश के विकास और प्रगति के प्रति उनकी प्रतिबद्धता, राज्यों के विकास के प्रति उनकी चिन्ता तथा एक सच्चे संघवाद में उनके विश्वास ने हमारे लिए न केवल विचार करने हेतु अपितु एक कार्य योजना तैयार करने का मुद्दा प्रदान किया है।

वे वास्तव में आधुनिक उड़ीसा के निर्माता थे तथा उड़ीसा में औद्योगीकरण के शिल्पकार थे। वह स्वयम् एक सफल उद्योगपति थे और उड़ीसा में उद्योग स्थापित करने के लिए उन्होंने अनेक कार्य किए।

महोदय, मैं जानता हूं और उनका विश्वास था कि भारत तब तक मजबूत देश नहीं बन सकता जब तक कि इसके राज्य मजबूत न हों। और यही कारण है कि जब भी उन्होंने उड़ीसा के विकास की बात उठाई तो इसके पीछे कोई संकीर्ण विचारधारा नहीं थी बल्कि वह सम्पूर्ण भारत का विकास चाहते थे। उन्होंने महसूस किया कि सच्चे संघवाद से भारत की विविधता में एकता मजबूत होगी तथा सामूहिक रूप से हमारे देश की प्रगति की गति और तेज होगी।

वह एक सफल मंत्री थे। मुझे यहां केन्द्रीय मंत्रिमंडल में उन्हें इस्पात तथा खान मंत्री के रूप में देखने का मौका मिला है। वह बहुत ही सफल मुख्य मंत्री और प्रभावशाली संसद सदस्य रहे। उन्होंने अपने समय की युवा पीढ़ी को प्रेरणा दी। वे एक महान स्वतंत्रता सेनानी तथा प्रखर राष्ट्रवादी थे। उनका जीवन इस बात का उदाहरण है कि राष्ट्र के विकास के लिए कुछ सिद्धान्तों के प्रति वचनबद्धता और समर्पण की भावना किस प्रकार हमारी जनता का मार्गदर्शन कर सकती है।

[श्री सोमनाथ चटर्जी]

हमने न केवल एक बहुआयामी नेता तथा व्यक्तिव्य खोया है बल्कि एक अच्छा पथप्रदर्शक, एक अच्छा दार्शनिक और एक अच्छा मित्र खो दिया है। देश के एक विशिष्ट नेता हमारे बीच नहीं रहे। उनके निधन से हमें अत्यधिक दुख है। मैं आपके माध्यम से उनके परिवार के सदस्यों को अपनी हार्दिक संवेदनाएं व्यक्त करता हूं। मैं उन्हें हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। आपने, माननीय प्रधान मंत्री और अन्य नेताओं ने जो कुछ कहा मैं अपने आपको उसके साथ जोड़ता हूं। संभवतः उनके निधन से रिक्त हुए स्थान को अभी नहीं भरा जा सकता।

हम एक और त्रासदी के प्रति भी अपना शोक प्रकट करते हैं जिसमें हमारे देश के अनेक नागरिकों की उस समय मृत्यु हो गई जब वे तीर्थयात्रा पर किसी और देश में गये थे। जो भी यहां कहा गया है मैं अपने आपको उसके साथ जोड़ता हूं। मैं माननीय प्रधान मंत्री जी द्वारा दिए गए आश्वासन के लिए उन्हें धन्यवाद देता हूं कि इस संबंध में सभी संभव सहायता देने के लिए सरकार सभी प्रयास करेगी।

मैं उन शोक संतप्त परिवारों के प्रति अपनी गहरी संवेदना व्यक्त करता हूं जिन्होंने अपने परिजनों को खोया है। हम वहां घायल हुए लोगों के भी शीघ्र और पूर्णतः ठीक होने की कामना करते हैं।

श्री मधुकर सरपोतदार (मुम्बई उत्तर-पश्चिम) : अध्यक्ष महोदय, हम इस सभा में लगभग ।। माह पहले आए थे। जब मैं स्वर्गीय बीजू पटनायक से पहली बार मिला, यह एक सुखद अनुभव था। इसके बाद, मुझे उनसे मिलने और उनसे बातचीत करने के बहुत से मौके मिले। मैंने उन्हें समझने का प्रयास किया। मुझे याद है कि स्वर्गीय पटनायक अनेक बार कहते थे, "श्री सरपोतदार" हमें राष्ट्रीय सरकार बनाने के लिए कठिन परिश्रम करना चाहिए। आप भी लोगों से कहिए।" वे इस देश के अति वरिष्ठ राजनीतिज्ञ थे। उनकी यह अभिलाषा थी कि इस देश में एक राष्ट्रीय सरकार बने। मुझे उनके साथ रहने का अवसर बहुत थोड़े समय के लिए मिला। लेकिन जो मैं उनके बारे में जान सका वह यह था कि वे चाहते थे कि हमारा देश सभी प्रकार की परिस्थितियों का सामना कर पाने में समर्थ होना चाहिए। राजनीति में जो हम अभी तक देखते रहे हैं अब इस बात की संभावनाएं बिल्कुल समाप्त हो गई हैं कि भविष्य में किसी एक पार्टी को भारी बहुमत प्राप्त हो सकता है और उसी पार्टी की सरकार होगी। लेकिन भविष्य में यह अपरिहार्य स्थिति होगी कि अनेक पार्टियां चुनाव में चुनी जाएंगी और उन्हें मिलीजुली सरकार बनानी होगी। यह उनका विश्वास और उनकी भावना थी। उन्होंने कहा कि वे इसकी पहल करेंगे। लेकिन संभवतः अपने स्वास्थ्य के ठीक न रहने के कारण वे अपने सुझावों और प्रस्तावों को कार्यान्वित न कर सके। बाद में, मुझे उनका जीवन-वृत्त जानने का अवसर मिला। तब मुझे मालूम चला कि वे एक महान् सेनानी थे।

वे एक अच्छे विमान-चालक थे जिन्हें इस क्षेत्र में अनेक जोखिम भरे कार्य कर दिखाने का श्रेय प्राप्त था। वह कद-काठी और अपने कार्यों से भी एक कद्दावर पुरूष थे और राजनीति में भी भीमकाय पुरूष थे।

जब मुझे श्री बीजू पटनायक के निधन का समाचार मिला, उस समय मैं मुम्बई में था जिससे मुझे गहरा धक्का लगा। वे 81 वर्ष के थे। उन्हें अपनी मृत्यु का कुछ आभास सा हो गया था। यदि इस देश के लिए किए गए उनके योगदान को देखा जाए तो आने वाली पीढ़ियों को उनके जैसे भव्य व्यक्तित्व वाला इन्सान मिलना मुश्किल होगा।

मैं अपने दल और अपनी ओर से उनके परिवार के प्रति अपनी गहरी संवेदना व्यक्त करता हूं।

इसी प्रकार, सऊदी अरब में एक दुखद घटना हुई जिसमें वहां तीर्थयात्रा पर गए अनेक लोगों की मृत्यु हो गई और अनेक घायल हो गए। अपने बेहतर जीवन की कामना से वहां प्रार्थना करने गए लोगों के साथ यह दुर्घटना हुई। पिछले वर्ष भी इसी प्रकार की घटना घटी थी जिसमें अनेक तीर्थयात्री अमरनाथ तीर्थ यात्रा में मारे गए थे। मृतकों के प्रति मैं अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। हमारे नए प्रधान मंत्री ने आज हमें आश्वासन दिया है कि वे प्रभावित लोगों के परिवारों की मदद के लिए कोई कमी नहीं छोड़ेंगे। मैं अपने दल और अपनी ओर से मृतकों के परिवारों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करता हूं।

श्रीमती गीता मुखर्जी (पंसकुरा) : महोदय, मैं अपने आपको श्री बीजू पटनायक के बारे में आपके, प्रधान मंत्री और अन्य सहयोगियों द्वारा व्यक्त की गई भावनाओं से जोड़ती हूं। मेरा उड़ीसा के साथ लम्बे समय से संबंध रहा है और मैं अकसर वहां जाती रही हूं। मैं उनके बहुमुखी विचारों से बहुत अधिक प्रभावित रही। उनके बारे में यहां जो कहा गया उसे दोहराते हुए एक बात जो उनके बारे में बहुत महत्वपूर्ण थी, वह यह थी कि उन्होंने जो कहा उसे करके दिखाया। उन्होंने कभी दोहरी नीति नहीं अपनाई। यह एक ऐसी अनिवार्यता है जो कि प्रत्येक राजनीतिज्ञ में होनी ही चाहिए और हम सभी को इसे सीखना चाहिये।

उनकी एक अन्य विशेषता यह थी कि उन्होंने अपने परिवार के लोगों को कोई विशेष सुविधा नहीं दी लेकिन एक जोखिम भरे कार्य के लिए इंडोनेशिया जाते समय वह अपनी पत्नी भी अपने साथ ले जाना नहीं भूले। ऐसे उदाहरण विरले ही मिलते हैं। उनका व्यक्तित्व बहुत ही विशाल था। उन्होंने अपनी प्रतिभा से आधुनिक उड़ीसा का निर्माण किया और देश को भी अनेक रूपों से समृद्ध किया। मैं उनके तथा मक्का में मारे गए लोगों के परिवारों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करती हूं। प्रधान मंत्री जी ने जो आश्वासन दिए हैं वह प्रशंसनीय हैं। मैं अपने दल की ओर से उनके प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करती हूं और इस सभा में जो कहा गया है उससे अपने आपको सम्बद्ध करती हूं।

[हिन्दी]

सरदार सुरजीत सिंह बरनाला (संगरूर) : अध्यक्ष महोदय, बीजू पटनायक जी हमारे अच्छे दोस्त थे। उनके निधन का मुझे और पार्टी को बहुत ही अफसोस है। 1967 में पहली दफा उनसे वाकफियत हुई। जब पंजाब में पहली दफा अकाली सरकार बनी थी तब वह पंजाब में आए। उस समय सरदार गुरनाम सिंह चीफ मिनिस्टर थे, उनसे इनकी बातचीत हुई। वह पंजाब में कोई स्टील प्लांट लगाना चाहते थे, प्रोजेक्ट लेकर आए थे। वहां पर इनकी दावतें होती रहीं, क्योंकि

इनका देश में बड़ा नाम था। कई कहानियां सुनने में आई। वहीं पता चला, हम तो इनको पहले जानते नहीं थे। इनकी देश के प्रति बहुत बड़ी सेवाएं रही हैं। यह रायल इंडियन एयरफोर्स में भी थे। कोर्ट मार्शल भी हुआ और फिर लालकिले में केद भी हुए। यही नहीं, इनके बारे में यह भी सुनने में आया कि इंडोनेशिया में जाकर देश की आजादी के लिए वहां पर जो संग्राम कर रहे थे उनको यह अपने जहाज में बिठा कर ले आए। इन्होंने बहुत ही बहादुरी का काम किया था, ऐसी बातें इनके बारे में सुनने में आई। जब बाद में इनके साथ इकट्ठे मिल कर काम करने का मौका मिला, जब जनता सरकार बनी तब यह स्टील और माइंस के मंत्री बनें। मुझे भी वहां थोड़ा सेवा करने का मौका मिला। इनका कैबिनेट में भी बहुत प्रभाव था। यह समझा जाता था कि यह गलत बात कहने वाले नहीं हैं, नाप-तोल कर सही बात करते हैं, यह प्रभाव इन्होंने छोड़ा था। इनकी बातें उस वक्त के प्राइम मिनिस्टर मोरारजी भाई बड़े गौर से, बहुत ध्यान से सुनते थे।

अध्यक्ष महोदय, इनको उड़ीसा का ज्यादा ध्यान रहता था। यह बेशक काम यहां कैबिनेट में करते थे लेकिन इनको उड़ीसा की तरक्की का ध्यान रहता था। मुझे कहने लगे कि इकट्ठे चलना है, उड़ीसा का प्रोग्राम बनाएं। मुझे वहां लेकर गए और वहां पर इन्होंने कई प्रोजेक्ट्स शुरू करवाए। फूड फार वर्क का काम उन दिनों एग्रीकल्चर मिनिस्ट्री के नीचे बड़े जोरों से चल रहा था, उसके नीचे हम तीन दिन इकट्ठे उड़ीसा में काम करते रहे और उन तीन दिनों में हम कहीं न कहीं कोई प्रोजेक्ट उड़ीसा के लिए देते रहे। वहां के चीफ मिनिस्टर और कैबिनेट मिनिस्टर को साथ लेकर सारे उड़ीसा स्टेट में घूमे। उससे जाहिर हो रहा था कि इनको उड़ीसा की तरक्की का कितना शौक है। इनको शौक था कि उड़ीसा को खेती के मामले में भी आगे बढ़ना चाहिए। इन्होंने वहां एक प्रपोजल दिया कि उड़ीसा की खेती तब तरक्की करेगी जब 400-500 आदमी पंजाब से वहां ले आओगे। वे तुमको खेती करना सिखाएंगे, ऐसा इन्होंने वहां पर प्रभाव दिया। इसी तरह से इनको इंडस्ट्री का था, वहां नये फोर्स बनाने का, चिल्का लेक का, हर बात का ध्यान था कि कैसे उड़ीसा तरक्की करे, वह इस बात में लगे रहते थे।

अध्यक्ष महोदय, हमारे साथ इनका एक और भी संबंध था, वह यह था कि इनकी पंजाब में शादी हुई थी। वह हमारी बहन पंजाब की थी, इस वजह से भी हमारा इनके साथ मिलना-जुलना बहुत रहता था। वह खुश तबीयत के थे, जब भी मिलते थे तभी खुशियां बिखेरते थे। उसके लिए भी इनको लोग याद करते रहेंगे। पार्लियामेंट में भी इनका योगदान लोकसभा और राज्यसभा में बहुत बढ़िया रहा। इनको लोग बहुत देर तक याद करते रहेंगे। इनकी जो देन खास करके उड़ीसा में है उसके लिए भी इनको लोग याद करते रहेंगे। हम इनके परिवार के साथ बहुत शोक प्रकट करते हैं और जो यहां पर प्रस्ताव आया है उसमें शरीक हैं। दूसरी बात यह हुई कि जो सऊदी अरेबिया में बहुत भारी नुकसान आग की वजह से हुआ है, जैसे यहां पर कहा गया कि शायद बंदोबस्त में कोई कमजोरी रह गई, बहुत लोग इकट्ठे हो जाते हैं, लाखों लोग इकट्ठे होते हैं तो कहीं न कहीं कोई इंतजाम में कमी रह जाती है। हमारे देश से भी शायद 90,000 से एक लाख तक लोग गए हुए थे, इसलिए हमें भी बहुत चिन्ता थी कि ये इबादत करने के बाद, मक्का-शरीफ में जाने के बाद वापिस घर लौट कर आएं। लेकिन यह ट्रेजडी हो गई और ऐसी ट्रेजडी हो गई कि जिसका अभी कोई पता नहीं लग रहा है कि कितना नुकसान हुआ है। उनके घरों के जो लोग हैं उनको शक है कि शायद हमारे लोगों को नुकसान न हुआ हो। वे बेचारे मारे-मारे फिर रहे हैं। सरकार कोशिश कर रही है, जैसे कि अभी प्राइम मिनिस्टर साहब ने बताया कि जो बचे हैं हम उन सब को सही सलामत वापिस लाने का पूरा प्रयत्न कर रहे हैं। जिनको नुकसान हुआ है, जिनको चोटें आई हैं, जो आग में झुलस गये हैं, उनकी देखभाल का पूरा इंतजाम करना चाहिए। जिनके परिवार के लोग वहां से वापस नहीं आ सके, वहीं खत्म हो गये, उनके परिवारों का भी ध्यान रखना चाहिए--ऐसी मेरी इस हाउस के जरिये इल्तिजा है।

[अनुवाद]

श्री चित्त बसु (बारसाट) : अध्यक्ष महोदय, मैं श्री बीजू पटनायक जी के निधन पर आपके, प्रधानमंत्री जी और अपने अन्य प्रतिष्ठित सहयोगियों द्वारा व्यक्त की गई गहरी संवेदना से अपने आपको सम्बद्ध करता हूं और इस महान् देशभक्त स्वतंत्रता सेनानी को त्याग तथा सहनशक्ति जैसे अन्य गुणों पर आधारित उनके जीवन मूल्यों के लिए अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। जैसा कि आप जानते हैं वह अनेक बार जेल गए और विशेष रूप से मैं उनके लाल किले में बंदी किए जाने का उल्लेख करना चाहता हूं। लाल किले में उन्हें इसलिए बंदी बनाया गया था क्योंकि वे नेताजी सुभाष चन्द्र बोस के नेतृत्व में इंडियन नेशनल आर्मी के सशस्त्र अभियान की जानकारी देश को दे रहे थे; वे भारत के लोगों को परचे और अन्य प्रचार सामग्री उपलब्ध करा रहे थे जिससे कि देश की जनता जान सके कि सीमापार नेताजी किस प्रकार स्वतंत्रता के लिए लड़ाई लड़ रहे हैं।

वे केन्द्र में और उड़ीसा के मुख्य मंत्री के रूप में एक समर्थ प्रशासक थे। उन्होंने मूल्यों पर आधारित एक राजनैतिक युग का प्रतिनिधित्व किया जो कि लगता है कि उनके निधन पर अब समाप्त हो गया है। मुझे इस सभा में उनके साथ कार्य करने का विशेषाधिकार प्राप्त हुआ है और उनका मेरे प्रति विशेष स्नेह रहा। वे बहुत ही स्पष्ट वक्ता थे। हमें अपनी भूल सुधारने के लिए और हमें यह अनुभव कराने के लिए कि हम अपनी ज्ञान सीमा को बढ़ा सकते हैं, कुछ भी कह सकते थे। श्री बीजू पटनायक का नाम घर-घर में जाना जाता है। यदि आप उड़ीसा के किसी भी गांव में जाएं और किसी भी व्यक्ति, युवा अथवा वृद्ध के सामने उनका नाम लें, वे कहेंगे कि श्री बीजू पटनायक उड़ीसा के बेटे थे। उन्होंने नए उड़ीसा, नए उत्कल जिसका औद्योगिकीकरण किया गया और जो आधुनिक कृषि और नई सृजनात्मक शक्ति पर आधारित था, का सपना देखा।

वे कहीं भी रहे, उनकी इच्छा यही रही कि पिछड़ा हुआ उड़ीसा राज्य आधुनिक, औद्योगिक और प्रगतिशील बने। मैं अपनी ओर से तथा अपने दल की ओर से इस महान नेता की याद में शोक प्रकट करता हूं और श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

अपनी बात समाप्त करने से पहले मैं हाल ही में सऊदी अरब में हज तीर्थयात्रियों के साथ हुई त्रासदी के बारे में कुछ शब्द कहना

[श्री चित्त बसु]

चाहता हूं। प्रधान मंत्री जी ने हमें आश्वासन दिया है कि उन्हें वापस लाने और उन्हें प्रत्येक आवश्यक सुविधा उपलब्ध कराने के लिए सभी प्रयास किए जा रहे हैं।

मैं चाहता हूं कि भारत सरकार जो भी संभव हो, उसे करने में पूरी रूचि ले और सशक्त कदम उठाएं।

मैं अपनी ओर से तथा अपनी पार्टी की ओर से मक्का में दुर्घटना में मारे गए लोगों के प्रति भी संवेदना प्रकट करता हूं।

[हिन्दी]

श्री चन्द्रशेखर (बलिया) : अध्यक्ष महोदय, बीजू जी के देहावसान से भारत की राजनीति में एक रिक्तता आई है। जैसा कि नेता विरोधी दल ने कहा कि बीजू की सामर्थ्य, उनका साहस, उनके बलिदान की भावना, उनका राष्ट्र प्रेम, नए भारत के लिए उनके मन में जो कल्पना थी, वह हम सब को प्रेरणा देती रहेगी। बीजू को मैंने विशेष तौर से एमरजैंसी के दिनों के बाद से नजदीक से देखा था। उनमें जो ममत्व की भावना थी, लोगों को आगे बढ़ाने के लिए उत्साह देने की जो क्षमता थी, वह हम को अनुकरणीय थी। वह उम्र में मुझ से बहुत बड़े थे लेकिन बात करते समय एक सहयोगी के समान, एक सामान्य व्यक्ति के समान बात करते थे। पिछले बीस वर्षों से मुझे जब कभी मिले, एक ही तरह से पुकारते थे 'बोलो बलिया' मैं जवाब देता था 'कहो उड़िया'। यह बात निरन्तर चलती रही। वह जिस दिन बीमार पड़े, उसके दूसरे दिन मैं अस्पताल गया था। डाक्टर ने मुझ से कहा, आप ही समझा सकते हैं क्योंकि वह अस्पताल में रूकने को तैयार नहीं हैं। मैंने जब उनसे कहा क्या सारी बुद्धि आपके पास ही है, डाक्टर की बात नहीं मानोगे। इस पर कहने लगे कि मेरा फेफड़ा खराब हो गया है, इसको यह ठीक नहीं कर सकते, मैं इस अस्पताल में कैसे रहूं। गाली-गलौज के बीस मिनट बाद अस्पताल में रहने के लिए तैयार हुए। दूसरे दिन जब मैं फिर उन्हें देखने गया तो मैंने उनसे पूछा कि बीजू मैं जा सकता हूं तो कहने लगे

[अनुवाद]

एक शर्त पर, 'कल जरूर आएंगें।'

[हिन्दी]

दूसरे दिन जब मैं उन्हें देखने गया तो उसी समय उनको दौरा पड़ा। डाक्टरों ने मुझ से कहा कि जब तक हम कहें नहीं, तब तक मत आना। मौत से दो दिन पहले मुझे कहा गया कि उनमें कुछ सुधार है। मैं जब अस्पताल गया लेकिन जब वहां पहुंचा तो शायद वह अंतिम सांस ले रहे थे। मैंने जो कुछ पुरी में देखा, उसकी मुझे इस समय याद आ रही है। हमारे साथ अटल जी, देवेगौड़ा जी थे। ऐसा लगता था कि समुद्र के किनारे सारा उड़ीसा सिमट कर आ गया है। सब की आंखों में आंसू और लोगों के मन में उदासी थी। वहां देश का नेतृत्व वर्ग बड़ी संख्या में मौजूद था।

बीजू में जो साहस, उत्साह और शक्ति थी, उसका मैं बखान नहीं कर सकता। अभी अटल जी और दूसरे लोगों ने उनके योगदान के बारे में कहा। 1942 की क्रांति में उनका योगदान था, इंडोनेशिया के प्रजातंत्र के आन्दोलन में उनका सक्रिय सहयोग था और नेपाल की प्रजातांत्रिक लड़ाई में उनका सहयोग था। लोहिया जी, अरूणा जी, जयप्रकाश जी और आचार्य नरेन्द्र देव जी से बीजू जी का सम्बन्ध था। आज के दिन मुझे एक पंक्ति याद आती है जो कि एक कवि ने आचार्य जी के बारे में लिखी थी। शायद वहीं पंक्ति बीजू पटनायक की मृत्यु के अवसर पर हमारी भावना को प्रकट करती है।

"जिलाए तो रहूं, बस कहां हमारा है,
यूं ही तो आदि से, अब तक मनुष्य हारा है,
सिवाय मौत के कोई तुझे झुका न सका,
तेरा मरना भी बस जीने का एक सहारा है।"

बीजू के लिए यही मेरी श्रद्धांजलि है।

हज में जो लोग मरे, उनके लिए हमारे मन में वेदना है। वे पुण्य कमाने गए थे लेकिन मृत्यु की गोद में चले गए। एक बड़ी पीड़ा और दर्द सारे राष्ट्र के लिए है। इन परिवारों के प्रति मैं संवेदना प्रकट करता हूं।

श्री इलियास आजमी (शाहबाद) : अध्यक्ष महोदय, बीजू पटनायक जी के बारे में आपने जो कहा, आदरणीय प्रधान मंत्री और आदरणीय नेता विरोधी दल ने जो कहा, मैं अपनी ओर से और अपनी पार्टी की ओर से उसमें अपने आपको शामिल करते हुए, यह कहूंगा कि मुझे भी कुछ दिनों तक बीजू जी के साथ काम करने का मौका मिला और कई बार अलग से भी बात करने का मौका मिला। ऐसे जमाने में जब इंसानियत क्षेत्र, भाषा, धर्म के नाम पर बंटती जा रही है, बीजू बाबू एक ऐसे आदमी थे जो न केवल इन सब चीजों से बल्कि दुनिया की जो राजनैतिक हदबंदियां हैं, उन्होंने उनसे ऊपर उठकर पूरी मानवता के लिये पूरी जिन्दगी जद्दो-जहद की। एक राष्ट्रवादी, मानवता के योद्धा और भारत को आज़ादी की लड़ाई लड़ने वाले को इस बात से क्या लेना-देना था कि वह अपनी जान को खतरे में डालकर जकार्ता में हवाई जहाज उतारता और अपनी जान पर खेलकर वहां पर आजादी की लड़ाई लड़ने वाले नेताओं अब्दुल रहीम सुकाणों और डा॰ मोहम्मद दत्ता को निकालकर दिल्ली लाता। इस वजह से वहां पर आजादी की लड़ाई सफल हुई। नेपाल में आवामी जद्दो-जहद के लिये अपनी जान पर खेला, जो इस बात का सबूत है कि वे उन हदबंदियों से ऊपर थे जिससे आज की मानवता जकड़ी हुई है। वैसे मेरा यह अनुभव रहा है कि वे इतने स्पष्टवादी थे कि आमतौर पर लोगों को लगता था कि वे जिस पार्टी के हैं, उसके विचार के खिलाफ भी बोलते हैं लेकिन वे जिस बात को सही समझते थे, करते थे। मैं यह नहीं कहता कि उनकी हर बात के साथ मैं हमेशा सहमत रहा और जनता दल में रहते हुये भी सहमत नहीं हुआ। वे जिस बात को सही समझते थे, उससे डरते नहीं थे और न ही पार्टी की पाबंदियों से और किसी दूसरी बात को कहने में उनका जवाब नहीं था।

उन्होंने आजादी की लड़ाई में क्या किया, इस पर बहुत कुछ रोशनी डाल चुके हैं लेकिन एमरजेंसी के जमाने में जब आजादी तथा संसदीय लोकतंत्र खतरे में था तो उस समय सबसे बड़े गवाह श्री चन्द्र

शेखर जी, जो इस समय मौजूद हैं, ने जनता पार्टी बनाने और उसके खिलाफ जद्दो-जहद करने में तथा बाद में जनता दल बनाने में एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। मैं अपनी ओर से और अपनी पार्टी की ओर से बीजू बाबू को हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

अध्यक्ष महोदय, मैं हज ट्रेजेडी के बारे में चंद शब्द कहना चाहता हूं। मैं खुद एक बार नहीं, दो मर्तबा हज करने जा चुका हूं और वहां के इन्तजामात को देखा है। मैं यह बात भरोसे के साथ कह सकता हूं कि सऊदी अरब हुकूमत जितने बड़े पैमाने पर वहां इन्तज़ामात में रुपया खर्च कर सकता है, उसने किया है। उस पर कोई उंगली नहीं उठाई जा सकती। यह बात जरूर है कि उन लोगों के पास अनुभव की कमी है। उनके जो इन्तजामात हैं, जो खर्च हैं, जो इक्विपमेंट्स हैं लेकिन ट्रेफिक कंट्रोल चलाने वाले लोगों के अनुभव की कमी है, बाकी इन्तज़ामात में कोई कमी नहीं है। इतना बड़ा मजमा होता है, अगर वहां पर मामूली सा भी कोई वाकया हो जाये या कभी मामूली बात पर कंकड़ी मारने का काम हो जाये तो किसी साल कोई जख्मी नहीं होता लेकिन अगर वहां पर ज़रा सी भगदड़ भी मच जाये तो 100-50 आदमी शहीद हो जाते हैं। इस साल जो कुछ हुआ, उससे हमें बहुत दुख हुआ जिसमें हमारे देश के करीब 200-250 लोग जांबहक हुये हैं। उनके परिवार के लोग परेशान हैं। लखनऊ में मेरे पड़ोस के परिवार के 11 लोग गये थे और सब लोग परेशान थे। मैंने मक्का तक टेलीफोन किया और मेरे पास जितने टेलीफोन नम्बर थे, उनसे कांटैक्ट किया लेकिन बहरहाल कल शाम को उनका खुद का फोन आ गया कि वे लोग भटक गये थे और अब सब लोग सुरक्षित हैं। मुझे उम्मीद है कि जितने लोग परेशान हैं, उनकी खैरियत की खबर सरकार की तरफ से दो-एक दिन में मिल जायेगी। हज में जो लोग शहीद हुये हैं, मैं उन लोगों को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और जो परिवार शोक में डूबे हैं, अपनी तरफ से और अपनी पार्टी की तरफ से दुख में बराबर शरीक करते हुये अपनी बात समाप्त करता हूं। शुक्रिया।

श्री जार्ज फर्नान्डीज (नालन्दा) : अध्यक्ष जी, बीजू पटनायक के निधन से एक महान् राष्ट्रभक्त को इस देश ने खोया है। उनके गुणों, कार्यों के बारे में अनेक बातें अपने, प्रधानमंत्री जी ने और नेता, विरोधी दल तथा अन्य साथियों ने कही हैं। मैं केवल दो-तीन बाते कहना चाहता हूं। मुझे पिछले 31 साल तक मित्र के तौर पर उनके साथ रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था।

हम उनको बार-बार एक बात कहते थे कि अपने जीवन के अनुभवों को वह लिखें क्योंकि इस देश की आजादी के संघर्ष में और दुनिया भर के अनेक ऐसे संघर्षों में उनका जो योगदान रहा, वह इस देश के लोगों को मालूम होना बहुत जरूरी है, यह बात हम हमेशा उनसे बड़े आग्रह से कहते थे। यह कहने के पीछे एक और कारण था कि बीजू पटनायक को बदनाम करने का एक सिलसिला इस देश में अनेक साल तक अनेक लोगों ने बहुत ही योजनाबद्ध ढंग से चलाया था। अब ये बीजू का बड़प्पन था कि वे इन चीजों की परवाह नहीं करते थे, लेकिन उन्हें बदनाम करने वाले लोग अगर उनके साहसी जीवन तथा केवल इस राष्ट्र के लिए नहीं, बल्कि कुछ पड़ोसी देशों की आज़ादी के लिए भी जो योगदान दिया था, इसको भी उसके साथ बताते तो कुछ और बात होती। मुझे नहीं मालूम कि बीजू ने लिखा या नहीं लिखा। हमने उनकी बेटी से भी बार-बार यह कहा कि आपके पिता कहीं भी बैठकर बोलते रहे और एक टेप रेकॉडर पर उनकी सारी बातें आ जाएं तो इतिहास में एक महान आदमी इस देश में पैदा हुआ, इसकी जानकारी आने वाली पीढ़ियों को मिलेगी। यहां कांग्रेस पार्टी के नेता शरद पवार जी ने अभी उस बात का जिक्र किया कि कैसे रॉयल एयर फोर्स में रहते हुए उन्होंने देश की आज़ादी के लिए अपना योगदान दिया था। उनका घर भूमिगत लोगों के आंदोलन का अड्डा था। डा॰ लोहिया, जयप्रकाश नारायण, अरुणा आसफ अली, तमाम लोग उनके घर से अभियान चलाते थे। जब देश के किसी हिस्से में जाने से थकान होती थी तो लौटकर वहीं आना होता था और ऐसे अवसर होते थे जब बीजू पटनायक अपने एयर फोर्स के जहाजों में इन लोगों को जहां पहुंचाना है, वहां पहुंचाते थे। अभी कॉमरेड चित्त बसु जी ने यहां पर बताया कि कैसे नेताजी की इंडियन नेशनल आर्मी के आंदोलन की जानकारी देश को पहुंचाने का काम वह करते रहे। बीजू में सबसे बड़ी खूबी जो रही वह यह थी कि रॉयल एयर फोर्स के अधिकारी के तौर पर वह काम करते रहे। वह केवल पायलट नहीं थे, दक्षिण एशिया के रॉयल एयर फोर्स के ट्रांसपोर्ट कमाण्ड के वे सबसे बड़े अधिकारी थे और उस नाते अपनी सेवा अंग्रेजों के युद्ध के पक्ष में करते थे, तनख्वाह पाते थे और ईमानदारी से अपनी सेवा करते थे। बाद में बर्मा में एक बार नहीं, अनेक बार उनके जहाज़ को अंग्रेज़ों की बंदूकों ने गिरा दिया था और एक बार नहीं, अनेक बार बीजू पटनायक युद्ध में मर चुके हैं, ऐसा अंग्रेज़ों का बयान भी आया था, लेकिन बीजू को बचना था और केवल अंग्रेज़ों की गोलियों से ही नहीं बचना था बल्कि 1942 के आंदोलन में उन्होंने जो योगदान दिया था, उसके अंत में जब उनकी गिरफ्तारी हो गई तो फांसी की सज़ा से भी वह बच गए। कैसे बच गए, उसकी चर्चा अभी करने की जरूरत नहीं है। उनकी तकदीर थी और इस देश का सौभाग्य था कि बीजू को बचना था और इस देश में बहुत कुछ काम करना था।

अध्यक्ष जी, न केवल आपने अपने वक्तव्य में कहा कि नये उड़ीसा के निर्माता वह रहे बल्कि लगभग सभी सदस्यों ने उड़ीसा के निर्माण के लिए उनकी ओर से हुए काम की यहां पर चर्चा की। उड़ीसा हिन्दुस्तान के सबसे अधिक गरीब दो राज्यों में से एक है। केवल एक ही राज्य उसके नीचे है, वह बिहार है। हम लोग यहां पर कुछ शब्दों का इस्तेमाल कर रहे हैं मगर उसके साथ कुछ और अर्थ भी लगाना बहुत जरूरी है। उड़ीसा जिसके लिए बीजू ने अपना समूचा जीवन समर्पित किया, इस लाचारी में क्यों है कि आज वहां पर भुखमरी प्रतिदिन लोगों की जानें ले रही है। बीजू इसका जवाब देते रहे और उनका जवाब ये था कि देश के विकास में कुछ प्रदेशों के साथ अन्याय होता है, विषमता को बढ़ाने का सिलसिला इस देश में जारी रहता है और आप मुझे क्षमा करेंगे, हो सकता है कि यह वक्त न हो, लेकिन नये प्रधान मंत्री यहां पर बैठे हैं, इसलिए मैं एक बात उनसे भी कहना चाहता हूं। हिन्दुस्तान में प्रधान मंत्री बनने पर महीनों के भीतर अपने क्षेत्र में हजारों करोड़ों रुपये की पूंजी पहुंचाते हैं।

देश के प्रधान मंत्री के रूप में बहुत कम सोचते हैं। श्री बीजू पटनायक की वही शिकायत होती थी और इसलिए प्रधान मंत्री जी,

[श्री जार्ज फर्नान्डीज]

मैं आज यहां पर एक बात कहना चाहता हूं कि बीजू पटनायक के प्रति हम सब लोगों का जो आदर है, हम लोग जो यहां पर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित क़र रहे हैं उसमें यदि कुछ और शामिल करना है तो फिर उड़ीसा के पिछड़ेपन को आप अपने एजेंडा में पहले आइटम के रूप में शामिल कीजिए और वहां के विकास का जो काम है उसको अपने हाथ में लीजिए। उड़ीसा अति सम्पन्न प्रदेशों में से एक है। सबसे अधिक सम्पन्न बिहार है और उसके बाद खनिज सम्पदा और अन्य हर प्रकार की सम्पदा के मामले में उड़ीसा है। लेकिन आज वह प्रदेश जिस लाचारी में है, उसको उससे बाहर निकालने के लिए अगर सरकार अपने को समर्पित करती है और प्रधान मंत्री किसी एक क्षेत्र के बारे में न सोचते हुए पूरे देश के संदर्भ में सोचते हैं तो मैं मानता हूं कि यह हम लोगों की एक उपलब्धि होगी और बीजू पटनायक को एक अच्छी श्रद्धांजलि होगी। मैं अपनी पार्टी की ओर से और अपनी ओर से उनके निधन पर श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

साथ ही हज में इस देश से गये हुए अनेक लोग जिस विपत्ति में फंसे और उनकी जानें गईं और अनेक लोग वहां पर इस परेशानी में फंसे, उनके प्रति अपनी संवेदना व्यक्त करते हुए मैं सरकार से इतनी प्रार्थना करना चाहता हूं कि वहां पर क्या होता है और उसमें किन लोगों का कितना योगदान हो सकता है, हमारी सरकार का कितना योगदान हो सकता है, वह हम नहीं ज़ानते हैं। लेकिन यह सही है कि यह दूसरी ऐसी भयावह घटना घटी है और अगर हमारी सरकार ऐसी घटना से हमारे यहां से जाने वाले लोगों को बचाने के लिए कोई उपाय सोच सकती हो तो वह उपाय यह सरकार सोचे। यही प्रार्थना करके मैं अपनी बात को समाप्त करता हूं।

श्री जी॰एम॰ बनातवाला (पोन्नानी) : हजरत मोहतरम स्पीकर साहब, श्री बीजू पटनायक की वफाले हसरत आयात पर जब मैं गौर करता हूं तो मुझे अल्लामा इकबाल का कहा याद आ जाता है :—

हजारों साल नरगिस अपनी बेनूरी पे रोती है,
बड़ी मुश्किल से होता है चमन में दीदावर पैदा।

स्पीकर साहब, एक ऐसा ही दीदावर चला गया। हम गौर करें तो यह रंज है, यह गम हैं, यह सदमा है कि मादरे वतन हिन्दुस्तान ने एक अजीम सपूत खोया है। हमारी आपसे यह दरख्वास्त रहेगी कि हमारे न्स रंजोगम को भी उनके सोगवार खानदान को पहुंचाया जाए और सोगवार खानदान के अफराद को यकीन दिलाया जाए कि हम उनके गम में बराबर के शरीक हैं। श्री बीजू पटनायक एक अजीम कायद थे। अभी उनकी जरूरत थी खास तौर से जिन बोहरानी हालात से मुल्क गुजर रहा है उनके मशविरे काफी मुफीद और कार-आमद हो सकते थे। लेकिन बहर-सूरत हर शख्स फानी है और इस गम से हम दो-चार हैं।

स्पीकर साहब, हज के दौरान एक अंदोहनाक अलमिया बरपा हुआ, जब भयानक आग की खबर हम तक पहुंची तो हम पर एक बिजली गिर गई थी। अल्फाज आजिज है कि सदमे गम का इजहार कर सकें। यकीनन सऊदी हुकूमत के इंतजामात काबिले-कद होते हैं। इस पर भी सऊदी हुकूमत इस अजीम हादसे की जांच बड़े पैमाने पर करवा रही है।

हमारी हकूमत ने भी फौरी तौर पर जो इकदामात किए, हम उसकी कद्र करते हैं। वजीरे-आलम गुजराल साहब ने जो यकीन दिलाया है कि हर मुमकिन इमदाद की जाएगी, उसके लिए भी हम बेहत ममनून है। इस भयानक आग में, इस जबर्दस्त अलमिए में जो शहीद हो गए, उनके लिए हम दुआ-ए-मकफिरत करते हैं और जितने जख्मी हुए हैं, उनके साथ हमारी हमदर्दियां हैं। हमारे मुल्क में भी न जाने कितने खानदान, रिश्तेदार, दोस्त और बिरादरान परेशान-हाल थे कि यहां से जो हज के लिए गए हुए हैं, उनका क्या हाल है। इस सिलसिले में बड़ी परेशानियों का उनको मुकाबला करना पड़ा। मुझे उम्मीद है कि हकूमत उस पर भी तवज्जह देकर आइन्दा क्या मजीद और बेहतर इंतजामात किए जा सकते हैं, उसके लिए कदम उठाएगी।

इन अल्फाज के साथ, इस भयानक आग में जो शहीद हुए, उनके लिए दुआ-ए-मकफिरत, उनके खानदान के लिए सब्र की तलकीन और जो जख्मी हुए, उनके लिए हमदर्दी का इजहार मैं अपनी तरफ से और पार्टी की तरफ से करता हूं।

[अनुवाद]

श्री सनत कुमार मंडल (जयनगर) : अध्यक्ष महोदय, श्री बीजू पटनायक भारतीय राजनीति के बहु-आयामी पुराने तथा अनुभवी नेताओं में से एक थे। वह स्वतंत्रता-पूर्व के राजनीतिज्ञों की समाप्त होती हुई पीढ़ी के अंतिम स्तम्भों में एक थे। उनकी मृत्यु से देश ने एक महान देशभक्त और एक कुशल प्रशासक खो दिया है।

मै अपना ओर से तथा अपने दल आर॰एस॰पी॰ की ओर से दिवंगत के शोक संतप्त परिवार के प्रति संवेदना प्रकट करता हूं। मैं सऊदी अरब में मारे गए हज तीर्थयात्रियों के शोक संतप्त परिवारों के प्रति भी अपनी संवेदना व्यक्त करता हूं।

अध्यक्ष महोदय : सदस्यगण दिवंगत आत्माओं के सम्मान में थोड़ी देर मौन खड़े रहेंगे।

अपराह्न 12.52 बजे

तत्पश्चात् सदस्यगण थोड़ी देर मौन खड़े रहे।

अध्यक्ष महोदय : सभा कल 22 अप्रैल, 1997 पूर्वाह्न 11.00 बजे पुनः समवेत होने के लिए स्थगित होती है।

अपराह्न 12.53 बजे

तत्पश्चात् लोक सभा मंगलवार, 22 अप्रैल, 1997/2 वैशाख, 1919 (शक) के पूर्वाह्न ग्यारह बजे तक के लिए स्थगित हुई।